शिव आमंत्रण

RNI: RJHIN/ 2013/ 53539

वर्ष: 5, अंक:01 | RNI: RJHIN/ 2013/ 53539 | अन्दर में महाशिवरात्रि विशेषांक जरूर पढ़ें | हिन्दी (मासिक), - 2017, जनवरी सिरोही, पृष्ठ: 4, मूल्य: 7.50 रुपए

स्वयं को पहचानने से होगी अनुभूति ...पेज - 2

अपनी खूबी को संभाल कर रखें ...पेज - 2

संत सम्मेलन में जुटे देश के संत, आध्यात्मिकता का आह्वान ...पेज - 3

बीके कोमल को राजीव गांधी एक्सीलेन्स अवार्ड का सम्मान ...पेज - 3

आंतरिक और बाह्य प्रकृति के जुड़ने से ग्लोबल वेलनेस ...पेज - 4

लंदन के साउथ हॉल में आध्यात्मिक कार्यक्रम ...पेज - 4

48वां दिव्य पुण्य स्मृति दिवस : संस्था के साकार संस्थापक पिताश्री प्रजापिता ब्रह्मा बाबा का 18 जनवरी को हुए थे अव्यक्त

विश्व शांति के महानायक 'प्रजापिता ब्रह्मा बाबा'

इस दुनिया में कुछ लोग इतिहास बनाते हैं तो कुछ लोग ऐसे कर्म कर जाते हैं जो स्वयं इतिहास बन जाते हैं। वह अपने पीछे ऐसे निशान छोड़ जाते हैं जो करोड़ों लोगों के लिए मार्गदर्शक, पथप्रदर्शक और प्रेरणास्त्रोत बन जाते हैं। ऐसे महान, तपस्वी, पुण्यात्मा, दिव्यगुणों से संपन्न, नई दुनिया के आधार स्तम्भ बने प्रजापिता ब्रह्मा बाबा। जिन्हें स्वयं परमपिता शिव परमात्मा ने अपना आधार स्तम्भ बनाया, उनके शरीर रूपी रथ का उपयोग किया। साथ ही सृष्टि के नवनिर्माण की आधारशिला रखी। आइए जानते हैं दादा लेखराज कैसे बने प्रजापिता ब्रह्मा और विश्व शांति के महानायक।

शिव आमंत्रण ■ माउण्ट आबू

कहते है पूत के लक्षण पालने में ही दिखाई देते हैं। सन् 1876 में सिंध के कृपलानी परिवार में एक बालक का जन्म हुआ। जिसका नाम रखा गया लेखराज। किसी ने सोचा भी नहीं होगा कि आगे चलकर यह बालक परमपिता शिव परमात्मा के रथ के रूप में नई सतयुगी दुनिया के स्थापना के कार्य में युगपुरुष की भूमिका निभाएगा।

लेखराज के माता-पिता वल्लभाचारी भक्त थे। वह एक स्कूल में प्रधानाध्यापक थे। वहीं माता भी नारायण की अनन्य भक्त थी। उनकी सुबह, भक्ति से शुरू होती थी और रात भी भक्ति में खत्म होती थी। लेखराज के माता-पिता का क्षेत्र में काफी प्रभाव था और लोग उन्हें आदर भाव देते थे। लेखराज को भक्तिभाव के संस्कार बचपन में ही विरासत के रूप में मिले। लेखराज को माता-पिता की पालना ज्यादा समय तक नहीं मिली। बचपन में ही उनकी माता का निधन हो गया। और कुछ समय बाद पिता का साया भी सिर से उठ गया। उसके बाद उनकी पालना चाचा ने की। चाचा एक व्यापारी थे। इस तरह लेखराज भी व्यापार में चाचा के साथ हाथ बंटाने लगे।

लेखराज में ईमानदारी और दयाभाव इतना था कि वह गेहूं तौलते समय ज्यादा गेहूं तौलते थे। वहीं कोई गरीब ग्राहक आ जाता तो उसे मुफ्त में भी गेहूं दे देते थे। जिसके चलते उन्हें कई बार चाचा की डांट भी खानी पड़ जाती थी।

सामान्य व्यापारी से बने प्रसिद्ध जौहरी

दादा लेखराज की बुद्धि बचपन से ही तीक्ष्ण व कुशाग्र थी। जिसके चलते वह कुछ ही समय में साधारण एवं छोटे से व्यापारी से प्रसिद्ध जौहरी बन गए। उन्हें हीरे-जवाहरातों की अचूक परख थी। अपने ईमानदारी और सच्चाई के गुण के कारण लेखराज राजाओं-महाराजाओं से लेकर धनाढ्य व्यक्तियों में प्रसिद्ध हो गए। उनका व्यक्तित्व इतना प्रभावशाली था जो एक बार उनके संपर्क में आता उनका गुणगान करता था।

राजा-महाराजाओं में था विशेष सम्मान

तत्कालीन वाईसराय आदि से भी उनका मेल-मिलाप था और नेपाल के राज्यकुल तथा उदयपुर के महाराजा का उन्हें विशेष आतिथ्य और स्नेह-सम्मान प्राप्त था और वे उनके राज दरबार में भी आमंत्रित होते थे। कई बार तो राजा लोग उन्हें कहते थे-लखीराम बाबू, भगवान से तो भूल हो गई जो हमको राजा बनाया, परंतु आपको नहीं बनाया। राजापन के सभी संस्कार तो आप में हैं। वास्तव में भगवान ने भूल नहीं की थी,क्योंकि वे राजे तो एक ताज वाले राजा थे जबकि भगवान ने दादा को दो ताज वाला दैवी राजा बनने का पुरुषार्थ कराया।

तीर्थयात्रा में थी विशेष रूचि

दादा को अमरनाथ, हरिद्वार, प्रयाग, वृंदावन, काशी आदि की यात्रा में विशेष रूचि थी और साधु-संन्यासियों को अपने यहां ठहराने में उन्हें बहुत खुशी होती थी। अपने लौकिक गुरु में उनकी बड़ी श्रद्धा थी और उनके स्वागत, सत्संग तथा आतिथ्य पर वे हजारों रुपया खर्च कर देते थे। एक बार की बात है उनके गुरु अपनी बहुत बड़ी शिष्य-मंडली को लेकर दादा के घर आए। दादा ने बहुत ही आदर से उनका स्वागत किया। उनमें गुरु भक्ति इतनी थी कि उन्होंने गुलाब जल की बोतलों की कई पेटियां मंगवाई। जिसे प्रातः और शाम दोनों समय छिड़का जाता था। फिर इसके पश्चात अगरबत्ती जलाई जाती थी। उन्हें गुरु के आराम का भी बहुत ध्यान रहता। कहीं जानवरों की आवाज से गुरु के आराम में खलल न पड़े, इस ख्याल से वे एक पहरेदार रखते थे। आम का मौसम न होने के कारण चार रुपए का एक आम मिलता, तो भी वह गुरु के लिए ले आते थे।

सभी के प्रति कल्याण की भावना

दादा में धर्म, जाति, देश, भाषा आदि के आधार पर भेदभाव नहीं था। उनके मन में कभी किसी के प्रति वैर या विरोध की भावना का आविर्भाव नहीं हुआ। हमेशा सभी के प्रति कल्याण की भावना रहती थी। दादा अक्सर कहते थे मैं बेगर से प्रिंस बना हूं। दादा की पारखी बुद्धि एवं असामान्य सूझ के कारण परमपिता परमात्मा शिव ने उनके तन में प्रवेश किया क्योंकि वह भी इस सृष्टि पर नर-नारी के जीवन को कौड़ी-तुल्य से बदलकर हीरे तुल्य बनाने के लिए आते हैं।

रहन-सहन और खान-पान था सात्विक

दादा का खान-पान और रहन-सहन सात्विक था। जब कभी वे मित्रों को भोज या पार्टी देते तो उसमें सिगरेट, शराब आदि की गंध भी नहीं होती थी। दादा द्वारा दिए गए भोज में सम्मिलित होने वाले राजा तथा रईस लोग कई बार सिगरेट, शराब आदि को न पाकर विनोदपूर्ण लहजें में कहते - दादा, आपकी पार्टी फीकी रही। परंतु दादा मुस्कराते हुए उत्तर देते कि आपके लिए हम अपना धर्म थोड़े ही भ्रष्ट करेंगे। आप तो हमें कागज के नोट देते हैं, परंतु हम तो उनके बदले में आपको हीरे देते हैं। ये सुनकर वे लोग हंस पड़ते।

श्रीनारायण के थे अनन्य भक्त

दादा बाल्यकाल से ही श्री नारायण के अनन्य भक्त थे। श्री नारायण की स्मृति उन्हें इतनी प्रिय थी कि वे अपने पूजा-पाठ के कक्ष के अतिरिक्त श्री नारायण का चित्र अपने शयनागार में और अपने सिरहाने के नीचे भी रखते थे। उनकी तिजोरी और जेब में भी श्री नारायण का चित्र हमेशा रखा रहता था। बाजार में जो श्री नारायण के छपे हुए चित्र प्रायः मिलते थे, उनमें श्री नारायण को लेटे हुए और श्री लक्ष्मी को उनके चरणों की दासी के तौर पर पांव दबाते हुए चित्रित किया हुआ होता है। उन्हें ये चित्र पसंद न थे क्योंकि वे इस चित्र को ऐसे समाज का प्रतीक मानते थे जिसमें स्त्री को गौण, दासी-जैसा अथवा तिरस्कार-युक्त स्थान दिया जाता हो। इसलिए वे चित्रकार से ऐसा चित्र बनवा लेते थे जिसमें कि लक्ष्मी का दासी-भाव अंकित न हो।

दादा का भक्ति-भाव इतना परिपक्व था कि व्यापार या घर की कैसी भी परिस्थिति हो, वे एक दिन भी भक्ति और पाठ के नित्य नियम से नहीं चूकते थे। रेल-यात्रा कर रहे हो तो भी वे श्रीमद्भगवदगीता का पाठ अवश्य करते थे, क्योंकि गीता में उनकी अनन्य श्रद्धा थी। राजा-महाराजाओं तथा धनाढ्य व्यक्तियों के साथ दादा का जवाहरात का व्यापार था, फिर भी वे भक्ति में लीन रहते थे।

परमात्मा को पाने बनाए 12 गुरु

दादा लेखराज को भगवान को पाने की चाह इतनी प्रबल थी कि उन्होंने बारह गुरु बनाए हुए थे। वह अपने गुरुओं का बहुत ही सम्मान और आदर करते थे। घर पर गुरुओं के आगमन पर वह स्वयं ही उनकी सेवा करते और उनके द्वारा बताई गई हर बात को मानते। उनका मानना था कि गुरु ही भगवान से मिला सकते हैं। बिना गुरु के भगवान को नहीं पाया जा सकता है। उनकी गुरु में अन्नय श्रद्धा थी। जब दादा को परमात्मा का पहली बार साक्षात्कार हुआ तो उन्होंने समझा कि गुरु ने ही उन्हें यह साक्षात्कार कराया है, लेकिन जब उन्होंने यह बात गुरु को बताई तो गुरु समझ गए कि ये तो भगवान की ही लीला है। भगवान ने ही उन्हें साक्षात्कार कराया है।

कभी नहीं टालते थे गुरु की आज्ञा

वे गुरु की हर आज्ञा को हर हालत में शिरोधार्य मानते थे। चाहे कुछ भी घटित क्यों न हो जाएं लेकिन वो गुरु की आज्ञा नहीं टालते थे। इसका पता इस घटना से चलता है कि एक बार उनके पोते का नामकरण संस्कार होना था। सायंकाल का समय था उस समय शहर के बड़े-बड़े व्यक्ति भोज के लिए उपस्थित थे। अचानक ही गुरु का तार आया कि तुरंत आओ। दादा ने अपनी पत्नी को कहा कि तुरंत कपड़े निकालो और ड्राइवर को बुलाओ क्योंकि मुझे जाना है। तब उनकी पत्नी ने कहा कि इस अवसर पर कैसे जा सकते हैं। तब दादा ने बहुत ही गूढ़ उत्तर दिया और कहा कि गुरु का बुलावा गोया काल का बुलावा है। काल आए तो क्या हम उसे ऐसा कहकर रोक सकते हैं कि आज हमारे पोते का नामकरण है। गुरु के प्रति ऐसी निष्ठा, भक्ति और सम्मान देखकर वहां उपस्थित लोग आश्चर्यचकित रह गए।

बाबा से हुआ श्रीकृष्ण का साक्षात्कार

बाबा शांति से रहने के लिए हम बच्चों को सदा यही शिक्षा देते थे कि यदि हमारे पास दुनिया का पूरा वैभव और सुख-साधन उपलब्ध हो, लेकिन शांति न हो तो हम भी आम आदमी की ही तरह हैं। संसार में मनुष्यों द्वारा जितने भी कार्य या उद्यम किए जा रहे हैं सबका एक ही उद्देश्य है शांति। सबसे पहले तो हमें यह जान लेना चाहिए कि शांति क्या है...? शांति का अर्थ केवल यह नहीं है कि हम कुछ न बोले, अपितु मन का चुप रहना सुख-शांति का आधार है। कहा भी जाता है कि जहां शांति है वहां सुख है अर्थात् सुख और शांति का आपस में गहरा नाता है। एक के बिना दूसरे की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। हम यही सोचते रह जाते हैं कि यह कर लूंगा तो शांति मिल जाएगी। आवश्यकताओं को पूरा करते-करते पूरा समय ही निकल जाता है और न तो शांति मिलती है और न ही खुशी। इसलिए अमूल्य शांति के लिए सबसे पहले हमें अपने आपको देखना होगा, अपने बारे में जानना होगा कि मैं कौन हूं, कहां से आया हूं और हमारे अंदर कौन-कौन सी शक्तियां हैं। जिसे हम अपने अंदर ही प्राप्त कर सकते हैं। ब्रह्मा बाबा हमेशा कहते थे कि बच्ची आप सभी का एक-एक कर्म ऐसा हो जो सभी के लिए आदर्श बन जाए। शांतिदूत भाई-बहनें आज विश्व के 137 देशों में विश्व शांति का संदेश दे रहे है।

- राजयोगिनी दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज, माउण्ट आबू, राजस्थान

घर से की सत्संग की शुरुआत

जब दादा सिंध में आए तो उनका जीवन बिल्कुल ही बदला हुआ था। अब दादा ने कई दिनों से बाहर घूमने जाना भी बंद कर दिया था। दादा ने सबसे पहले घर से ही सत्संग की शुरूआत की। घर के सभी सदस्य आंगन में बैठते और दादा आत्मा का ज्ञान देते। थोड़े ही दिनों में दादा के दूर के संबंधी भी आने लगे। अब दादा को गीता में और अधिक श्रद्धा हो गई थी, इसलिए वे गीता-ज्ञान सुनाया करते थे। गीता का ज्ञान सुनाते-सुनाते लोगों को साक्षात्कार होने लगे। किसी को श्रीकृष्ण का, कलियुगी सृष्टि के महाविनाश तो किसी को सतयुगी दैवी दुनिया का दिव्य साक्षात्कार होने लगा।

दादा को हीरे की थी अचूक परख

सुंदर शारीरिक रचना और उच्च कोटि के संस्कार होने के अतिरिक्त दादा की बुद्धि भी असाधारण थी। वे अपनी मेधावी बुद्धि के आधार पर तीव्र रफ्तार से उन्नति की ओर आगे बढ़े। जवाहरात का धंधा बहुत ऊंचा धन्धा माना जाता है और जवाहरात को पहचानने की अचूक बुद्धि हरेक को प्राप्त नहीं होती है। दादा हीरों के ऐसे निपुण पारखी थे कि वे हीरों की पुड़िया को देखते ही उसका मूल्य एक मिनट में बता देते कि व्यापारी दंग रह जाते थे। व्यापारी स्वयं जो हीरे आदि खरीदते थे, उनका मूल्य कराने के लिए भी वह दादा के पास हीरे ले जाते थे।

परमात्मा ने कराए दिव्य साक्षात्कार

विष्णु चतुर्भुज का दृश्य दिखाया...

दादा एकांत में बैठे हुए थे तभी उन्हें विष्णु के चतुर्भुज रूप का साक्षात्कार हुआ। उनके सामने विष्णु प्रगट हुए और कहा कि -अहम् चतुर्भुज तत्त्वम् अर्थात् मैं जो हूं वह आप ही है। इसके बाद फिर श्री कृष्ण, जगन्नाथ जी, बद्रीनाथ जी और केदारनाथ जी बारी-बारी से आए और उन सभी ने भी ऐसे ही कहा। इन साक्षात्कारों से जहां दादा को बहुत हर्ष हुआ वहीं अब दादा के मन में विचार चलने लगा कि मुझे तत्त्वम् का जो वरदान दिया गया है, उसका वास्तव में क्या भाव है। ये साक्षात्कार मुझे किसने कराए। इसके बाद अन्य साक्षात्कारों में परमात्मा ने दादा को उनके 84 जन्मों की जीवन कहानी बताकर यह स्पष्ट कर दिया कि आनेवाली सतयुगी दुनिया में आप ही श्रीकृष्ण थे और फिर बनेंगे।

दिव्य चक्षु का दिया वरदान...

एक दिन दादा मुम्बई में अपने घर में हो रहे सत्संग में बैठे थे, तभी वे सत्संग से उठकर अपने कमरे में चले गए। कमरे में जाते ही उन्हें विष्णु चतुर्भुज का दिव्य साक्षात्कार हुआ। दादा ने सोचा कि गुरु ने ही ये साक्षात्कार करवाए होंगे। इसलिए उन्होंने अपने गुरु को यह वृत्तांत सुनाया। परंतु गुरु के हाव-भाव से उन्होंने समझा कि गुरु इन बातों से बिल्कुल ही अपरिचित हैं। अतः उनका मन अब परमपिता परमात्मा की ओर मुड़ा जो ही वास्तव में सबका सद्गुरु है। दादा के मन में यह निश्चय हो गया कि दिव्य दृष्टि और दिव्य बुद्धि का दाता केवल परमात्मा ही है और उस एक ही को सच्चा गुरु मानना चाहिए। उन्हें महसूस हुआ कि परमपिता परमात्मा ने ही उन्हें दिव्य-चक्षु रूप का वरदान दिया है।

सृष्टि के महाविनाश का भी हुआ साक्षात्कार...

दादा को एक दिन साक्षात्कार हुआ कि सृष्टि में महाविनाश होने के परिणामस्वरूप करोड़ों आत्माएं परमधाम को वैसे ही लौट रही है जैसे पतंगे प्रकाश की ओर लपकते हैं। दादा ने दिव्य दृष्टि द्वारा भारत में विकराल गृहयुद्धों का और प्राकृतिक प्रकोपों का भी साक्षात्कार किया। विनाश के ये डरावने दृश्य देखकर दादा कांपने लगे। दादा ने देखा एक बहुत बड़ी बाढ़ आई है। जीव-प्राणी भयभीत होकर जान बचाने के लिए इधर-उधर भाग रहे है, परंतु वे बच नहीं पा रहे हैं। कहीं पर अग्नि अपना महाविकराल रूप धारण करके नगरों और जीव-प्राणियों को भस्मसात करती जा रही है। कहीं धमाके से मूसलाधार बारिश, तो कहीं पृथ्वी कम्पायमान होकर फट रही है। और सब जगह लोग हाहाकार कर रहे है और प्राणों की रक्षा के लिए भाग रहे हैं, परंतु लोग पारस्परिक युद्धों तथा प्राकृतिक प्रकोपों से बच नहीं पा रहे। बाबा ने सब देखा।

माउण्ट आबू से विश्वभर में शांति का संदेश देने निकले 'शांतिदूत'

ब्रह्मा बाबा ने 14 वर्ष तक गुप्त रहकर भाई-बहनों को कराई कठिन तपस्या, 300 लोगों से शुरू हुआ कारवां, आज लाखों लोगों ने जुड़कर बदली जीवन की दिशा

शिव आमंत्रण ■ माउण्ट आबू

ओम मंडली में आने वाली माताओं और कन्याओं को ब्रह्मचर्य के नियम का दृढ़ता से पालन करता देखकर लोगों में हलचल शुरू हो गई। लोग कहने लगे कि हमने ऐसा सत्संग कभी नहीं देखा। यदि माताएं ब्रह्मचर्य का पालन करने लगेगी तो इस सृष्टि की वृद्धि कैसे होगी? लोगों ने ओम मंडली का विरोध करने के लिए एक संगठन बनाया और अनेक तरह से ओम मंडली में आने वाली माताओं, बहनों, कुमारियों और भाइयों को डराना धमकाना और मारपीट करना शुरू कर दिया। उन्हें तरह-तरह से परेशान किया गया और अत्याचार किए गए। जादू-टोने, टोटके करवाए गए।

...और निरंतर आगे बढ़ती गई मंडली: इस प्रकार ओम मंडली अनेक प्रकार के विरोधों, विघ्नों और समस्याओं का सामना करते हुए निरंतर आगे बढ़ती रही। इस सत्संग में आने वालों की संख्या भी दिन-प्रतिदिन बढ़ती गई। इसकी प्रसिद्धि को देखकर कई लोगों ने ओम-मंडली के ऊपर मुकदमा दायर कर दिया और अपने परिवार के लोगों को वहां जाने से मना करने लगे। इतना सब होने पर भी बाबा सदा निश्चिंत, अडोल और साक्षी अवस्था में रहते थे। वे कहा करते थे कि हम तो परमपिता परमात्मा के सेवक हैं, वही सब ठीक कर देगा। धर्म के मार्ग पर ये परीक्षाएं तो आती ही है, परंतु हमें इस निश्चय में स्थित रहना चाहिए कि सच की बेड़ी डोलती है, डूबती नहीं है। उन्होंने परमात्मा का साथ और निश्चय होने के कारण सभी समस्याओं पर विजय पाई। जो कि सच्चाई की राह पर चलने का प्रतीक था। तब लोगों में यह धारणा बन गई कि इस मंडली में जाने वाले लोगों को जादू लग जाता है। इन पांच बंगलों में लगभग 300 भाई-बहनें कई वर्षों तक इक्ट्ठे रहकर ईश्वरीय ज्ञान लेते रहे।

तीन वर्ष पाकिस्तान में चली संस्था: अगस्त 1947 की बात है जब देश के बंटवारे की घोषणा हो गई तो बहुत से लोगों ने पाकिस्तान छोड़कर भारत आना शुरु कर दिया। परंतु देश के बंटवारे के बाद भी यह ईश्वरीय यज्ञ लगभग तीन वर्षों तक कराची में ही चलता रहा। जब इन लोगों को मालूम हुआ कि ओम-मंडली अभी पाकिस्तान में है तो उन्होंने भारत आने के लिए अनेक बार आवेदन किया तथा निमंत्रण पत्र भेजें। फिर परमात्मा के आदेशानुसार ओम मंडली का भारत में स्थानांतरण किया गया।

कराची से हजारों लोगों ने दी विदाई

सन् 1950 में ओम-मंडली के ब्रह्मा-वत्स कराची छोड़कर भारत आने के लिए रवाना हुए। जब सिंध के मुसलमान लोगों को यह पता चला कि सभी ब्रह्मा-वत्स भाई-बहनें पाकिस्तान छोड़कर जा रहे हैं तो उन्होंने न जाने के लिए बहुत आग्रह और अनुरोध किए। आप तो खुदा के है, आपका तो हिन्दू-मुसलमान की राजनीति या भेद-भाव से कोई सम्बन्ध ही नहीं है। परंतु यज्ञ-वत्सों को तो यह ईश्वरीय आदेश था कि अब भारत में ही जाना है। पाकिस्तान के हजारों लोगों ने पुष्पवर्षा एवं फूलमाला पहनाकर विदाई दी। ओखा बंदरगाह से रेलगाड़ी द्वारा आबू आए। सभी यज्ञ-वत्स आबू में बृज कोठी में आकर रहने लगे।

ओम मंडली का ब्रह्माकुमारी नामकरण

पहले संस्था का नाम ओम मंडली था। बाद में परमात्मा के आदेशानुसार ब्रह्मा बाबा ने प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय नाम किया। अंतरराष्ट्रीय मुख्यालय आबू पर्बत, राजस्थान में है। संस्था संयुक्त राष्ट्र संघ का एक स्वैच्छिक सेवा संगठन है। जिसे संयुक्त राष्ट्र के आर्थिक एवं सामाजिक परिषद में सार्वजनिक सलाहकार और यूनिसेफ में सलाहकार का दर्जा प्राप्त है।

ओम मंडली का कराची में स्थानांतरण

इसके पश्चात् ओम मंडली कराची स्थानांतरित हो गई। वहां छावनी में शांत वातावरण में बाबा ने पांच अच्छे-अच्छे बंगले लिए। ये बंगले ओम् निवास, बेबी भवन, ब्वाइज भवन, प्रेम भवन और राधा भवन के नाम से जाने जाते थे। इस पुरुषोत्तम संगमयुग में धर्म के माता-पिता से सभी को जो निष्काम, शुद्ध और आत्मिक प्यार मिला उसका वर्णन करना असंभव है। उस सुख और स्नेह के आगे उन्हें स्वर्ग का सुख भी फीका लगता था। ऐसा सुख तो व्यक्ति को करोड़ों रुपए खर्च करने के बाद भी मिलना मुश्किल है। इस पृथ्वी पर ईश्वर द्वारा पालना लेने का यही एक सुनहरा अवसर सारे कल्प में आत्माओं को मिलता है। जिन्होंने उसका अनुभव किया है, वे ही इसे जानते हैं। परमात्मा शिव ने प्रजापिता ब्रह्मा के तन में दिव्य प्रवेश करके माता-पिता के रूप में आत्माओं को ऐसा लाड़-प्यार दिया जिससे कभी किसी के मन में संकल्प ही नहीं उठता था।

मम्मा को सौंपी यज्ञ की बागडोर

बाबा ने ऊं राधे को इस सत्संग के लिए अवैतनिक संचालिक नियुक्त किया और आठ अन्य ज्ञाननिष्ठ माताओं और कन्याओं की अक्टूबर 1937 को एक कार्यकारिणी समिति बनाकर अपना समस्त धन और सम्पत्ति समिति के नाम कर दिया। परमात्मा शिव ने ओम बाबा के तन में प्रवेश करके सभी को निर्देश दिया कि वे अपने पिता, पति, अभिभावक से पत्र लेकर आए जिसमें लिखा हो कि वे अपनी पुत्री, बहू अथवा पुत्र को ओम राधे के पास जाकर ज्ञानामृत सुनने तथा अपने जीवन को पवित्र बनाने के लिए खुशी से छुट्टी देते हैं। जिनके परिवार के सदस्य आते थे, उन्हें तो पत्र लाने में कोई कठिनाई नहीं हुई, लेकिन जिसके परिजन सत्संग में नहीं आते, उन्हें पत्र लाने में कठिनाई का सामना करना पड़ा। लेकिन सभी ने अपनी उच्च धारणाओं, मनो परिवर्तन, सादा जीवन आदि के प्रभाव से ऐसा पत्र ले लिया।